है शबाब अपने लहू की आग में जलने का नाम

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची

हिन्दी रूपः डॉ आरिफ़ अब्बास

कर्बला का रेगिस्तान आग की तरह भड़क रहा है, ज़मीन के ज़र्रे-ज़र्रे से शोले उठ रहे हैं, नहरे फ़ुरात का रेतीला साहिल दूर-दूर तक फैला हुआ है जहाँ न दरख़्तों का साया है और न कोई पनाह की जगह। नहर से कुछ फ़ासले पर नवास-ए-सरवरे कायनात और आपके पाकबाज़ साथियों के कुछ ख़ेमे लगे हुए हैं मगर इमाम हुसैन[अ०] और आपके तमाम जाँनिसार साथी भूक और प्यास से निढाल हैं। सामने नहरे फ़ुरात बह रही है मगर कूफ़ा की बेरहम फ़ौज के सिपाही नहर पर पहरा दे रहे हैं ताकि कोई शख़्स भी उनकी इजाज़त के बग़ैर पानी की एक बूँद भी न पी सके। उधर हुसैनी ख़ेमों में सब के सब प्यास से हलाक हो रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे सूखे हुए ख़ाली मश्कीज़े हाथों में लिये हुए ''अल-अतश अल-अतश'' (हाय प्यास, हाय प्यास) की फ़रियाद कर रहे हैं मगर इस भयानक गर्मी, भूक और प्यास के बावजूद उनमें कोई भी यज़ीद की इताअत और उसके शैतानी लश्कर के सामने गर्दन झुकाने के लिए तैयार नहीं है। मंचले जवान नंगी तलवारें लिए हुए मौत की आँखों में आँखें डाले शहादत का जाम पीने के लिए बेचैन हैं। बूढ़े कमर कसे हुए जेहाद के शौक़ में तड़प रहे हैं। माएँ अपने छोटे-छोटे बच्चों को लिए हुए इमाम आली मक़ाम के हुक्म का इन्तेज़ार कर रही हैं, और इजाज़त के लिए परेशान हैं कि जल्दी से उन्हें राहे हक़ में क़ुर्बानी के लिए पेश कर दें। एक शहीद की लाश आई और अभी उसकी बेवा की आँखों के आँसू ख़ुश्क भी न हुए थे कि उस शहीद का एक बहुत कमसिन बच्चा कमर में छोटी सी तलवार लगाए हुए सैय्युदुश्शोहदा[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और नन्हें हाथ जोड़कर जंग के मैदान में जाने की इजाज़त माँगने लगा। इमाम[अ०] ने साथियों से फ़रमाया। अभी इस बच्चे का बाप शहीद हुआ है ऐसा न हो कि इसकी माँ इसकी शहादत पर राज़ी न हो। ये सुनते ही उस बच्चे ने अर्ज़ कीः ऐ हमारी जान और माल के मालिक रसूले ख़ुदा[स०] के बेटे! मेरी कमर में ये तलवार तो मेरी माँ ही ने लगाई है और मुझे शहादत के लिए सजा बनाकर आपकी ख़िदमत में भेजा है। फिर जब ये आवाज़ उसकी माँ ने सुनी तो उसने फ़रियाद की कि आक़ा ये मेरा हक़ीर हदिया है इसे वापस न कीजिए। फ़रज़न्दे अली[अ०] व फ़ातिमा[स०] लोगों से कह रहे थे कि तुम मेरी वजह से क्यों अपनी जानें गंवाते हो। मेरी इजाज़त है, तुम मुझे अकेला छोड़कर अम्नो अमान की जगह तलाश कर लो और जिधर चाहे चले जाओ मगर इमामत की शमा के परवाने बिफरे हुए शेरों की तरह शहादत का जाम पीने पर तुले हुए हैं। वहब बिन अब्दुल्लाह कल्बी अपनी दुलहन और अपनी माँ के साथ हुसैनी लश्कर में थे। सिर्फ़ सत्तरह दिन हुए थे उनकी शादी को। वहब के दोनो हाथ मैदान में लड़ते-लड़ते कट गए। अपने ख़ून में ज़मीन पर गिर कर लोटने लगे। ये देखकर दुलहन भी मैदान में निकल आई और वहब की हिफ़ाज़त करने लगी मगर किसी ने उस शेरदिल औरत के सर पर गुर्ज़ मारकर उसे भी शहीद कर दिया। वहब का सर काटा गया माँ ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ी शहादत का मन्ज़र देख रही थी। ज़ालिमों ने बेटे का सर माँ की तरफ़ फेंक दिया। उस बहादर ख़ातून ने सर को हाथों पर लेकर सीने से लगा लिया और ख़ून भरे गालों को चूमा और आसमान की तरफ़ देखकर कहने लगी। ऐ मेरे मालिक! मेरी इस क़ुर्बानी को क़ुबूल फ़रमा। फिर उस सर को मैदान की तरफ़ फेंक कर कहने लगी। मैंने जो क़ुर्बानी अल्लाह की राह में पेश कर दी अब उसे वापस नहीं लूँगी। मददगारों की क़ुर्बानियों के बाद बनी हाशिम की क़ुर्बानियों का सिलसिला शुरु हुआ। फिर वह वक़्त भी आ गया जब अली की बेटी हज़रत ज़ैनब[स०] के फ़रज़न्द औन[अ०] और मुहम्मद[अ०] मैदान में आए और दोनों ज़ख़्मी होकर ज़मीन पर गिरे। इमाम हुसैन[अ०] भाँजों की लाशों

शेष....... पेज 15 पर

बाद हमें कहना पड़ता है कि कर्बला में दिल बहत्तर थे धड़कन एक थी, शरीर बहत्तर थे आत्मा एक थी, ख़ून अलग-अलग थे परन्तु तड़प एक थी।

दसवीं मुहर्रम की सुबह आई। इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथी नमाज़ के लिए खड़े हुए यज़ीद की सेना युद्ध के लिए तैयार हुई। एक ओर सुबह की सफ़ेदी थी दूसरी ओर शाम का अंधकार, एक ओर धूल पर तयम्मुम (नमाज़ के पहले यदि वज़ू करने के लिए पानी उपलब्ध न हो तो धूल पर एक विशेष प्रकार से हाथ मार कर मुँह पर मलने को तयम्मुम कहा जाता है) हो रहा था, दूसरी ओर घोड़ों को पानी पिलाया जा रहा था। एक ओर नमाज़ पढ़ने के लिए लोग पंक्तिबद्ध हो रहे थे, दूसरी ओर युद्ध के लिए तत्परता दिखायी जा रही थी, एक ओर रुकू (नमाज़ पढ़ने में झुकना) हो रहे थे, दूसरी ओर कमानें (धनुष) लचक रहे थे, एक ओर मानव-चरित्र को उच्चतम बनाने वाले सजदे (नमाज़ में शीश नवाना) थे, दूसरी ओर धुरात्मक रूप से सिर ऊँचे उठे हुए थे, एक ओर स्थायी सफ़लतता, इमाम हुसैन[अ०] के साथियों के मुख ज्योतिमान व प्रकाशित किए हुए थी, दूसरी ओर धन व एश्वर्य के खोटे सिक्के आँखों को चकाचौंध कर रहे थे। यहाँ तक कि यज़ीद की सेना की ओर से एक तीर युद्ध का संदेश लेकर आ गया। युद्ध आरम्भ हुआ। अपराह्न तक इमाम हुसैन[अ०] के समस्त साथी व सम्बन्धी शहीद हो गए। हज़रत अली अकबर[अ०] के चाँद से सीने पर बरछी लगी हज़रत क़ासिम[अ०] का शव घोड़ों की टापों से रौंद डाला गया, हज़रत अब्बास[अ०] के बाज़ू कटे, हज़रत अली असग़र[अ०] के गले पर तीर लगा। अब इमाम हुसैन[अ०] स्वयं सेना के सामने आए। फ़रमा रहे हैं कि बताओ मेरे क़त्ल का क्या औचित्य है? क्या मैंने धर्म में कुछ परिवर्तन किया है, क्या मैंने किसी की धन-सम्पत्ति पर अनाधिकृत रूप से अधिकार जमाया है? क्या मैंने किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार किया है? इमाम हुसैन[अ०] के इस कथन पर हज़रत अली अकबर[अ०] के क़ातिल, हज़रत अली असग़र[अ०] के क़ातिल, इमाम हुसैन[अ०] के परिवार को नष्ट करने वाले यह कहते हुए दृष्टिगोचर होते हैं कि हुसैन तुमने कोई पाप या अत्याचार नहीं किया है। हुसैन[अ०] के कहने का भी उद्देश्य यही था कि दुनिया देख ले कि मेरे क़ातिल भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि हम आपको क़त्ल कर सकते हैं परन्तु आपकी चरित्र की पराकाष्ठा से इनकार नहीं कर सकते। तदोपरान्त इमाम हुसैन[अ०] पर तीर व व तलवार के वार होने लगे। अंततः इमाम हुसैन[अ०] प्रहारों से चूर होकर घोड़े से ज़मीन पर आ गए दुष्ट पापी शिम्र ने हुसैन[अ०] का सिर काट लिया। फ़ुरात का पानी उछलने लगा, काली आँधी चलने लगी, वातावरण अंधकार पूर्ण हो गया और आवाज़ें आ रही थीं ''हुसैन[अ०] क़त्ल कर दिए गए'', ''हुसैन[अ०] शहीद कर दिये गए''।

□□□

शेष...... है शबाब अपने लहू की आग..........

को लिए हुए ख़ेमे की तरफ़ आ रहे हैं। अब्बास[अ०] भी साथ हैं अली अकबर[अ०] भी साथ हैं। सैय्यिद-ए-आलम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की बूढ़ी कनीज़ फ़िज़्ज़ा दौड़ी हुई शाहज़ादी के पास आई और क़दमों पर सर रखकर बोली, मेरी शाहज़ादी! आपके बेटे मारे गए। ज़ैनब[स०] ने आसमान को देखा और सर ख़ालिक़ के सजदे में झुका दिया और ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ कीः मेरे अल्लाह तेरा शुक्र कि मैं कामयाब हो गई। मेरे भाई के क़दमों पर मेरी कमाई क़ुर्बान हुई।

एक वक़्त वह भी आया जब इमाम हुसैन[अ०] का 32 साल का शेरदिल भाई अबुलफ़ज़लिल अब्बास[अ०] मैदान में आया और एक ही हमले में इब्ने साद की टिड्डी-दल फ़ौज की सफें तोड़ डालीं और नहर में घोड़ा डाल दिया। मगर जब सकीना की मश्क नहर से भर कर ख़ेमे की तरफ़ जाने लगे तो पूरी फ़ौज ने तीरों, तलवारों और नेज़ों से हमला कर दिया अली[अ०] का बहादर बेटा ज़ख़्मी होकर घोड़े से गिरा। अलमदारे लश्करे हुसैनी को गिरते हुए देखकर इमाम हुसैन[अ०] ने अपनी कमर थाम ली और फ़रमाया अब्बास[अ०]! तुम्हारे मरने ने मेरी कमर को तोड़ दिया।

फिर इस सूरज ने वह मन्ज़र भी देखा जब इमाम हुसैन[अ०] का अट्ठारह साल का ख़ूबसूरत बेटा अली अकबर[अ०] मैदान में आया। इमाम[अ०] ने आसमान पर नज़र फ़रमाई और ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ की। ऐ मेरे परवरदिगार! तू गवाह रहना कि अब जंग के मैदान में मेरा वह ख़ूबसूरत बेटा जा रहा है जो तेरे रसूल[स०] की बिल्कुल तस्वीर है।

अली अकबर[अ०] ने बेपनाह जंग की मगर किसी ज़ालिम ने छुप कर बरछी का वार किया और शहज़ादा तेवरा कर ज़मीन पर गिरा। माँ हज़रत लैला और फूफी हज़रत ज़ैनब ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ी हैं। इमाम आली मक़ाम नौजवान की लाश पर आ गए। अली अकबर[अ०] अपने ख़ून में एड़ियाँ रगड़ रहे हैं, बूढ़े बाप ने नौजवान बेटे के गाल पर अपना गाल रख दिया और आसमान की तरफ़ मुँह करके आवाज़ दी ऐ मेरे चाँद! तेरे बाद अब इस दुनिया की ज़िन्दगी पर ख़ाक है।